अनश्च

अन्नन्ताद् अव्ययीभावात् टच् स्यात्

यह विधिसूत्र है।

शब्दार्थ है – (च) और (अनः) 'अन्' से — ।

यहाँ सूत्रस्थ 'च' से ही ज्ञात हो जाता है कि सूत्र अपूर्ण है। इसके स्पष्टीकरण के लिए 'राजाहःसखिभ्यष्टच्' से 'टच्' तथा 'अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः' से 'अव्ययीभावे' की अनुवृत्ति की जाती है। 'अव्ययीभावे' पञ्चम्यन्त में विपरिणत होता है और सूत्रस्थ 'अनः' उसका विशेषण बन जाता है। विशेषण होने के कारण उसमें तदन्त विधि हो जाती है।

'समासान्तः' का यहाँ अधिकार है।

इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा –

अन्नन्त अव्ययीभाव (जिसके अन्त में अन् हो) से समासान्त 'टच्' (अ) प्रत्यय होता है।

उदाहरण – राज्ञः समीपम् (राजा के समीप)

इस विग्रह में समीप अर्थ में वर्तमान 'उप' अव्यय का 'अव्ययं विभक्ति' से सुबन्त 'राज्ञः' का समास होकर 'उपराजन्' रूप बनता है। यहाँ अन्त में 'अन्' होने के कारण प्रकृत सूत्र से 'टच्' होकर उपराजन् अ रूप बनेगा।

नस्तद्धिते

यह विधिसूत्र है।

सूत्र का शब्दार्थ है – (तद्धिते) तद्धित परे होने पर (नः) नकार का — — किन्तु होता क्या है, यह जानने के लिए 'भस्य' और 'टेः' तथा 'अल्लोऽनः' से 'लोपः' की अनुवृत्ति करनी होगी। सूत्रस्थ 'नः' भस्य का विशेषण है, अतः उसमें तदन्त विधि हो जाती है। 'अङ्गस्य' का अधिकार है।

इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा – तद्धित प्रत्यय परे होने पर नकारान्त 'भ' संज्ञक अङ्ग के 'टि' का का लोप होता है।

उदाहरण – 'उपराजन् अ' इस स्थिति में 'उपराजन्' भसंज्ञक अङ्ग है और उसके अन्त में नकार भी है। अतः तद्धित परे होने [illegible] प्रकृत सूत्र से टि (अन्) का लोप होकर 'उपराज अ' =

= उपराज रूप बनता है।
इस स्थिति में प्रथमा के एकवचन में 'उपराजम्' रूप सिद्ध होता है।

रूपसिद्धि: — उपराजम्
राज्ञः समीपम् (लौकिक विग्रह)
राजन् ङस् उप (अलौकिक विग्रह)

'राज्ञः समीपम्' इस लौकिक विग्रह में 'राजन् ङस् उप' ऐसा अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति०' से सामीप्य अर्थ में विद्यमान 'उप' का राजन् शब्द के साथ समास होने पर
'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा
'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (ङस्) का लोप होने पर
राजन् उप
'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'उप' की उपसर्जन संज्ञा
'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्व प्रयोग
उप राजन
'अजश्च' से टच् (अ) होने पर उप राजन् अ
'नस्तद्धिते' से राजन् की टि (अन्) का लोप होने पर
उप राज् अ = उपराज
'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा
'स्वौजस०' से सु विभक्ति
उपराज सु
'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा
'अव्ययादाप्सुपः' से सु का लोप प्राप्त था, किन्तु 'नाव्ययीभावादतोऽत्वपञ्चम्याः' से सु का 'अम्' आदेश
'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होने पर 'उपराजम्' रूप सिद्ध होता है।

अध्यात्मम् — आत्मनि अधि (लौकिक विग्रह)
आत्मन् ङि अधि (अलौकिक विग्रह)

'आत्मनि अधि' इस लौकिक विग्रह में 'आत्मन् ङि अधि' ऐसा अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति०' से विभक्ति अर्थ में विद्यमान 'अधि' अव्यय का 'आत्मन्' शब्द के साथ समास होने पर
'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा
'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (ङि) का लोप

आत्मन् अधि

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'अधि' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्व प्रयोग

अधि आत्मन

'अनश्च' से टच् (अ) अधि आत्मन अ

'नस्तद्धिते' से टि (अन्) का लोप होने पर

अधि आत्म् अ

'इको यणचि' से यण् (य्) आदेश

अध्य् आत्म = अध्यात्म

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा

'स्वौजसमौट' से सु विभक्ति – अध्यात्म सु

'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा

'अव्ययादाप्सुपः' से सु लोप प्राप्त था, किन्तु 'नाव्ययीभावादतो-ऽम्त्वपञ्चम्याः' से 'सु' का 'अम्' आदेश होने पर

'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर 'अध्यात्मम्' रूप सिद्ध होता है